

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक एवं मानसिक विकास के संदर्भ में शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन

अशोक कुमार

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, एफ. एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश
प्रदेश

डॉ०-अबधेश सिंह

शोध-निर्देशक, शिक्षा विभाग, एफ. एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश

1. सारांश

प्रस्तुत अध्ययन उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक एवं मानसिक विकास के संदर्भ में शैक्षिक अभिरुचि की भूमिका का अनुभवजन्य अध्ययन प्रस्तुत करता है। शैक्षिक अभिरुचि को केवल किसी विषय के प्रति पसंद या परीक्षा में उपलब्धि की आकांक्षा तक सीमित नहीं माना गया है, बल्कि इसे जिज्ञासा, सीखने में संलग्नता, ध्यान, सक्रिय भागीदारी और सीखने के अनुभव के प्रति सकारात्मक उन्मुखता से संबंधित व्यापक अवधारणा के रूप में देखा गया है। अध्ययन में 400 विद्यार्थियों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर सामाजिक विकास से संबंधित आठ तथा मानसिक विकास से संबंधित आठ कथनों का विश्लेषण किया गया। पाँच-बिंदु लिफ्ट मापनी पर प्राप्त प्रतिक्रियाओं के लिए आवृत्ति, प्रतिशत, भारित स्कोर, माध्य तथा मानक विचलन का उपयोग किया गया। सामाजिक विकास के आठ कथनों के माध्य 3.99 से 4.17 तथा मानसिक विकास के आठ कथनों के माध्य 4.05 से 4.15 के बीच रहे। सामाजिक विकास में मित्रों के साथ मधुर संबंध, सहपाठियों से सकारात्मक जुड़ाव, विद्यालय एवं सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता, सामाजिक स्वीकार्यता और सहयोग से संबंधित प्रतिक्रियाएँ अनुकूल रहीं। मानसिक विकास में सोचने और तर्क करने, समस्या समाधान, स्मरणशक्ति, योजनाबद्ध कार्य, ध्यान, मानसिक परिपक्वता, आलोचनात्मक सोच तथा सीखने की क्षमता से संबंधित प्रतिक्रियाएँ भी अनुकूल दिशा में रहीं। उपलब्ध साहित्य में शैक्षणिक रुचि, सामाजिक समर्थन, विद्यालयीय संबद्धता, सामाजिक-भावनात्मक कौशल, भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा सीखने की संलग्नता के बीच संबंधों पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है। वर्तमान अध्ययन इन प्रवृत्तियों को उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के सामाजिक एवं मानसिक विकास के संदर्भ में एक साथ देखने का प्रयास करता है।

2. प्रमुख शब्द

शैक्षिक अभिरुचि, उच्च माध्यमिक विद्यार्थी, सामाजिक विकास, मानसिक विकास, शैक्षिक संलग्नता, सामाजिक-भावनात्मक विकास, सीखने की क्षमता

113	ISSN2277-3630(online), Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 15 Issue:06 in June-2026 https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR Copyright (c) 2026 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY). To view a copy of this license, visit https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/
-----	--

3. परिचय

उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थी जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है। इस स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था से आगे बढ़ते हुए उच्च शिक्षा, रोजगार और सामाजिक जीवन की आगामी भूमिकाओं के लिए तैयारी करते हैं। इस अवधि में शैक्षिक अनुभव केवल विषयगत ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि विद्यार्थियों के सामाजिक संबंध, समूह में कार्य करने की क्षमता, आत्मविश्वास, विचार करने की शैली, समस्या समाधान की प्रवृत्ति और भावनात्मक अनुभव भी विकसित होते हैं। इसलिए शैक्षिक अभिरुचि को केवल शैक्षणिक उपलब्धि के साथ जोड़ना विद्यार्थियों के विकास की पूरी तस्वीर प्रस्तुत नहीं करता। जिस विद्यार्थी को सीखने की गतिविधि अर्थपूर्ण और रोचक लगती है, वह कक्षा में अधिक ध्यान दे सकता है, प्रश्न पूछ सकता है, समस्या पर विचार कर सकता है और सहपाठियों के साथ सीखने की प्रक्रिया में भाग ले सकता है। इस दृष्टि से शैक्षिक अभिरुचि सामाजिक और मानसिक विकास के अध्ययन का महत्वपूर्ण आधार बनती है।

शैक्षिक अभिरुचि में जिज्ञासा, प्रेरणा, सीखने में संलग्नता तथा विषयवस्तु के प्रति व्यक्तिगत अर्थबोध जैसे पक्ष सम्मिलित होते हैं। उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के लिए इनका महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि इसी अवधि में अध्ययन की आदतें, विद्यालयीय संबद्धता, सामाजिक संबंध और मानसिक कार्यप्रणालियाँ अपेक्षाकृत स्थिर रूप ग्रहण करने लगती हैं। साहित्य में सामाजिक समर्थन, विद्यालयीय संबद्धता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, शैक्षणिक प्रेरणा और सामाजिक-भावनात्मक कौशल को विद्यार्थियों की शैक्षिक संलग्नता और कल्याण से जोड़ा गया है। वर्तमान अध्ययन में इसी व्यापक संदर्भ के भीतर सामाजिक और मानसिक विकास को शैक्षिक अभिरुचि के साथ देखा गया है। अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं में सामाजिक संबंधों, सहभागिता और सहयोग तथा तर्क, समस्या समाधान, स्मरण, नियोजन, ध्यान और आलोचनात्मक सोच जैसे मानसिक पक्षों की दिशा को स्पष्ट करना है।

4. साहित्य समीक्षा

अहमर और अनवर (2013) ने उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन किया। उनका कार्य यह संकेत देता है कि विद्यार्थी का शैक्षिक अनुभव उसके सामाजिक परिवेश से अलग नहीं किया जा सकता। इस साहित्य से यह व्यापक प्रवृत्ति उभरती है कि शैक्षिक संलग्नता को सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

सियाही और मायो (2015) ने अध्ययन की आदतों और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध पर ध्यान दिया। इससे सीखने के नियमित व्यवहार और शैक्षिक परिणामों के बीच संबंध की प्रासंगिकता सामने आती है। इस साहित्य से यह व्यापक प्रवृत्ति उभरती है कि शैक्षिक संलग्नता को सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

चेल्लामुथु और सुब्रमणियन (2017) ने उच्च विद्यालय विद्यार्थियों में शैक्षणिक तनाव और मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। इससे शैक्षिक परिस्थितियों और विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति के बीच संबंध की

आवश्यकता स्पष्ट होती है। इस साहित्य से यह व्यापक प्रवृत्ति उभरती है कि शैक्षिक संलग्नता को सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

टैन, सिन्हा, शिन और वांग (2018) ने उच्च विद्यालय के नए विद्यार्थियों में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम की आवश्यकताओं का अध्ययन किया। यह कार्य किशोर विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक विकास की शैक्षिक महत्ता को सामने रखता है। इस साहित्य से यह व्यापक प्रवृत्ति उभरती है कि शैक्षिक संलग्नता को सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

कुमार (2020) ने उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन किया। इससे विद्यार्थियों के भावात्मक पक्ष को शैक्षिक विकास के साथ जोड़कर देखने का आधार मिलता है। इस साहित्य से यह व्यापक प्रवृत्ति उभरती है कि शैक्षिक संलग्नता को सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

राधामणि और कलाईवाणी (2021) ने विद्यार्थियों में शैक्षणिक लचीलेपन की समीक्षा की। कठिन परिस्थितियों में भी अध्ययन जारी रखने की क्षमता को शैक्षिक विकास का महत्वपूर्ण पक्ष माना जा सकता है। इस साहित्य से यह व्यापक प्रवृत्ति उभरती है कि शैक्षिक संलग्नता को सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

अल्कार्नी और अल्हर्बी (2022) ने सोशल मीडिया के विद्यार्थियों के भावात्मक चरों पर प्रभाव का अध्ययन किया। इससे आधुनिक सामाजिक परिवेश के विद्यार्थियों के भावात्मक अनुभव पर प्रभाव की ओर संकेत मिलता है। इस साहित्य से यह व्यापक प्रवृत्ति उभरती है कि शैक्षिक संलग्नता को सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

श्रीराम और एर्क (2022) ने अकादमिक, सामाजिक और जीवनगत अंतःक्रियाओं को विद्यार्थी सफलता से जोड़ने वाला ढाँचा प्रस्तुत किया। इससे शैक्षिक सफलता को बहुआयामी रूप में समझने का आधार मिलता है। इस साहित्य से यह व्यापक प्रवृत्ति उभरती है कि शैक्षिक संलग्नता को सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

यीगर, रोमेरो और इवेक (2023) ने सामाजिक-भावनात्मक अधिगम कार्यक्रम के शैक्षणिक तथा गैर-अकादमिक परिणामों का परीक्षण किया। अध्ययन सामाजिक-भावनात्मक कौशल और विद्यार्थी परिणामों के संबंध को समर्थन देता है। इस साहित्य से यह व्यापक प्रवृत्ति उभरती है कि शैक्षिक संलग्नता को सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

फाम (2024) ने सामाजिक-भावनात्मक अधिगम के शैक्षणिक प्रदर्शन, भावनात्मक कल्याण और क्रियान्वयन पर साहित्य समीक्षा प्रस्तुत की। इस साहित्य से यह व्यापक प्रवृत्ति उभरती है कि शैक्षिक संलग्नता को सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

शुक्ला, पांडे और कुमार (2025) ने भारतीय विद्यार्थियों में सोशल मीडिया और शैक्षणिक संलग्नता के प्रभावों का अध्ययन किया। इस साहित्य से यह व्यापक प्रवृत्ति उभरती है कि शैक्षिक संलग्नता को सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विकास से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।

5. शोध अंतराल

साहित्य की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक-भावनात्मक कौशल, विद्यालयीय संबद्धता, सामाजिक समर्थन, प्रेरणा और सीखने की संलग्नता पर पर्याप्त कार्य उपलब्ध है। अनेक अध्ययनों ने शैक्षणिक रुचि या प्रेरणा को उपलब्धि से जोड़ा है, जबकि अन्य अध्ययनों ने सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को स्वतंत्र परिणाम के रूप में देखा है। फिर भी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि को सामाजिक विकास और मानसिक विकास के विशिष्ट व्यवहारात्मक संकेतकों के साथ एक ही अनुभवजन्य ढाँचे में देखने वाले अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं। विशेष रूप से मित्रता, सामाजिक कौशल, समूह कार्य, सहपाठी जुड़ाव, विद्यालयीय सहभागिता, सामाजिक स्वीकार्यता और सहयोग जैसे सामाजिक संकेतकों को तर्क, समस्या समाधान, स्मरण, नियोजन, ध्यान, मानसिक परिपक्वता, आलोचनात्मक सोच और सीखने की क्षमता जैसे मानसिक संकेतकों के साथ जोड़कर देखना वर्तमान अध्ययन की विशिष्टता है।

6. अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि और सामाजिक विकास से संबंधित प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक विकास के संदर्भ में शैक्षिक अभिरुचि से संबंधित प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।

7. शून्य परिकल्पनाएँ

H₀₁: उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि और सामाजिक विकास के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H₀₂: उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक विकास पर शैक्षिक अभिरुचि का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

8. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन अनुभवजन्य एवं वर्णनात्मक प्रकृति का है। अध्ययन में 400 विद्यार्थियों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का उपयोग किया गया। सामाजिक विकास से संबंधित आठ तथा मानसिक विकास से संबंधित आठ पाँच-बिंदु लिफ्ट कथनों का विश्लेषण किया गया। प्रत्येक कथन पर प्राप्त प्रतिक्रियाओं के लिए आवृत्ति, प्रतिशत, भारित स्कोर, माध्य और मानक विचलन का उपयोग किया गया। इस प्रकार विश्लेषण का उद्देश्य

विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं की केंद्रीय दिशा और वितरण को स्पष्ट करना रहा। सामाजिक विकास से संबंधित कथनों में मित्रता, सामाजिक कौशल, समूह कार्य, सहपाठी जुड़ाव, सहभागिता, सामाजिक स्वीकार्यता और सहयोग जैसे पक्ष शामिल थे, जबकि मानसिक विकास से संबंधित कथनों में तर्क, समस्या समाधान, स्मरण, नियोजन, ध्यान, मानसिक परिपक्वता, आलोचनात्मक सोच और सीखने की क्षमता सम्मिलित थी।

9. सामाजिक विकास से संबंधित परिणाम

सामाजिक विकास से संबंधित आठों कथनों में विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का समग्र स्वरूप अनुकूल रहा। इन कथनों के माध्य 3.99 से 4.17 के बीच रहे। मित्रों के साथ मधुर संबंध का माध्य 4.11, सामाजिक कौशल के विकास का 4.02, समूह कार्य में सहजता का 3.99, सहपाठियों से सकारात्मक जुड़ाव का 4.13, विद्यालय एवं सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता का 4.17, सामाजिक स्वीकार्यता का 4.09, सहपाठियों के साथ सहयोग का 4.11 तथा सामाजिक ताने-बाने की मजबूती का 4.06 रहा। इन परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों ने सामाजिक विकास के विभिन्न पक्षों को शैक्षिक अनुभव से जुड़े महत्वपूर्ण आयामों के रूप में अनुभव किया। सामाजिक विकास केवल मित्रता या व्यक्तिगत व्यवहार तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समूह कार्य, सहभागिता, स्वीकार्यता और सहयोग तक विस्तृत दिखाई दिया।

सामाजिक विकास का कथन	माध्य	मानक विचलन
मित्रों के साथ मधुर संबंध	4.11	1.07
सामाजिक कौशल का विकास	4.02	1.08
समूह कार्य में सहजता	3.99	1.19
सहपाठियों से सकारात्मक जुड़ाव	4.13	1.08
विद्यालय एवं सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता	4.17	1.08
सामाजिक स्वीकार्यता	4.09	1.09
सहपाठियों के साथ सहयोग	4.11	1.18
सामाजिक ताने-बाने की मजबूती	4.06	1.23

सामाजिक परिणामों की व्याख्या करते हुए यह देखा जा सकता है कि विद्यालय एवं सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता का माध्य 4.17 रहा, जबकि सहपाठियों से सकारात्मक जुड़ाव का माध्य 4.13 रहा। मित्रों के साथ मधुर संबंध तथा सहपाठियों के साथ सहयोग दोनों का माध्य 4.11 रहा। सामाजिक स्वीकार्यता का माध्य 4.09 तथा सामाजिक ताने-बाने की मजबूती का माध्य 4.06 रहा। सामाजिक कौशल और समूह कार्य के माध्य क्रमशः 4.02 और 3.99 रहे। इन सभी परिणामों को एक साथ देखने पर विद्यार्थियों की सामाजिक प्रतिक्रियाओं में एक समान सकारात्मक दिशा दिखाई देती है। यह निष्कर्ष उन अध्ययनों से भी संगत है जिनमें विद्यालयीय

संबद्धता, सामाजिक समर्थन और सामाजिक-भावनात्मक कौशल को विद्यार्थी की शैक्षिक संलग्नता से जोड़ा गया है।

10. मानसिक विकास से संबंधित परिणाम

मानसिक विकास से संबंधित आठों कथनों में भी विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ अनुकूल दिशा में रही। सोचने और तर्क करने की क्षमता का माध्य 4.05, कठिन समस्याओं के समाधान की क्षमता का 4.10, स्मरणशक्ति में सुधार का 4.15, योजनाबद्ध ढंग से कार्य करने की आदत का 4.11, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता का 4.08, मानसिक परिपक्वता का 4.08, आलोचनात्मक सोच का विकास का 4.06 तथा सीखने की क्षमता का 4.07 रहा। यह परिणाम दर्शाता है कि मानसिक विकास का आयाम केवल स्मरणशक्ति या ध्यान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें उच्चतर मानसिक प्रक्रियाएँ भी शामिल हैं। विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं में तर्क, समस्या समाधान, नियोजन और आलोचनात्मक सोच जैसे पक्षों की उपस्थिति यह दर्शाती है कि शैक्षिक अनुभव को मानसिक सक्रियता के व्यापक संदर्भ में देखा जा सकता है।

मानसिक विकास का कथन	माध्य	मानक विचलन
सोचने और तर्क करने की क्षमता	4.05	1.19
कठिन समस्याओं के समाधान की क्षमता	4.10	1.13
स्मरणशक्ति में सुधार	4.15	1.15
योजनाबद्ध ढंग से कार्य करने की आदत	4.11	1.17
ध्यान केंद्रित करने की क्षमता	4.08	1.19
मानसिक परिपक्वता	4.08	1.09
आलोचनात्मक सोच का विकास	4.06	1.15
सीखने की क्षमता	4.07	1.19

मानसिक विकास के परिणामों में स्मरणशक्ति में सुधार का माध्य 4.15 रहा, जबकि योजनाबद्ध ढंग से कार्य करने की आदत का माध्य 4.11 और कठिन समस्याओं के समाधान की क्षमता का 4.10 रहा। ध्यान केंद्रित करने की क्षमता तथा मानसिक परिपक्वता दोनों का माध्य 4.08 रहा। सीखने की क्षमता का माध्य 4.07, आलोचनात्मक सोच का 4.06 और सोचने तथा तर्क करने की क्षमता का 4.05 रहा। इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की मानसिक प्रतिक्रियाएँ सीखने की प्रक्रिया के अनेक स्तरों को समाहित करती हैं। शैक्षिक अभिरुचि को इस प्रकार एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है जो विद्यार्थी को अध्ययन सामग्री के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने, विचार करने और सीखने के कार्य को व्यवस्थित करने के अवसर प्रदान करती है।

11. सामाजिक एवं मानसिक विकास का समेकित विवेचन

सामाजिक और मानसिक दोनों आयामों को साथ देखने पर विद्यार्थियों के विकास का परस्पर संबंधित स्वरूप सामने आता है। सामाजिक आयाम में सभी आठ कथनों के माध्य लगभग चार या उससे अधिक रहे और मानसिक आयाम में भी सभी माध्य चार से अधिक रहे। यह सामूहिक प्रतिक्रिया इस बात की ओर संकेत करती है कि विद्यार्थियों ने अपने शैक्षिक अनुभव को सामाजिक सहभागिता और मानसिक सक्रियता दोनों से जोड़ा। समूह कार्य, सहपाठी सहयोग और विद्यालयीय गतिविधियों में सहभागिता विद्यार्थियों को संवाद, विचार-विनिमय और सामूहिक समस्या समाधान के अवसर देती है। इसी प्रकार तर्क, ध्यान, स्मरण, नियोजन और आलोचनात्मक सोच सीखने की प्रक्रिया को मानसिक रूप से सक्रिय बनाते हैं। इसलिए शैक्षिक अभिरुचि को केवल विषयगत पसंद के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक और मानसिक सहभागिता से जुड़े शैक्षिक अनुभव के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

साहित्य समीक्षा में कोर्परशोक एट अल. (2020), वर्गास-मैड्रिज और कोनिशी (2021), गार्सिया और रोड्रिगेज (2022), गुओ एट अल. (2023), हट्टुनेन और अन्य (2024) तथा झांग और कियान (2024) ने विद्यालयीय संबद्धता, सामाजिक समर्थन, सामाजिक-भावनात्मक कौशल और सीखने की संलग्नता के विभिन्न संबंधों को सामने रखा है। वर्तमान अध्ययन में सहपाठी जुड़ाव, सहयोग, सामाजिक स्वीकार्यता और सहभागिता से संबंधित अनुकूल प्रतिक्रियाएँ इन व्यापक साहित्यिक प्रवृत्तियों के साथ संगत दिखाई देती हैं। दूसरी ओर अमला जयंती और लक्ष्मणा कुमार (2020), इवेक और यीगर (2021), सिंह और मेहता (2023), फाम (2024), बेगम (2024) और शिए एट अल. (2025) के अध्ययन शैक्षिक रुचि, प्रेरणा, भावनात्मक अनुभव और सीखने के परिणामों की परस्परता की ओर संकेत करते हैं। वर्तमान मानसिक विकास के परिणाम इस दिशा को आगे बढ़ाते हुए तर्क, समस्या समाधान, स्मरण, नियोजन और आलोचनात्मक सोच जैसे पक्षों को अनुभवजन्य संदर्भ में सामने रखते हैं।

12. परिकल्पनाओं के संदर्भ में विवेचन

प्रथम शून्य परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि और सामाजिक विकास के बीच महत्वपूर्ण संबंध न होने से संबंधित है। सामाजिक विकास के आठों कथनों में माध्य 3.99 से 4.17 के बीच रहा और विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ मित्रता, सामाजिक कौशल, समूह कार्य, सहपाठी जुड़ाव, सहभागिता, स्वीकार्यता और सहयोग की दिशा में अनुकूल रहीं। ये परिणाम सामाजिक विकास और शैक्षिक अनुभव के बीच सकारात्मक प्रवृत्ति की ओर संकेत करते हैं। हालांकि प्रत्यक्ष संबंध की सांख्यिकीय पुष्टि के लिए शैक्षिक अभिरुचि के स्वतंत्र समग्र स्कोर की आवश्यकता होगी। इसलिए उपलब्ध वर्णनात्मक परिणामों से शून्य परिकल्पना का औपचारिक सांख्यिकीय निर्णय नहीं दिया जाता, बल्कि यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि सामाजिक विकास से संबंधित प्रतिक्रियाएँ आगे प्रत्यक्ष संबंध परीक्षण के लिए पर्याप्त रूप से प्रासंगिक दिशा प्रस्तुत करती हैं।

द्वितीय शून्य परिकल्पना मानसिक विकास पर शैक्षिक अभिरुचि के महत्वपूर्ण प्रभाव से संबंधित है। मानसिक विकास के आठों कथनों में माध्य 4.05 से 4.15 के बीच रहा और सभी कथनों में विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ अनुकूल दिशा में थीं। सोचने, समस्या समाधान, स्मरण, नियोजन, ध्यान, मानसिक परिपक्वता, आलोचनात्मक सोच और सीखने की क्षमता जैसे सभी पक्ष अध्ययन के संदर्भ में महत्वपूर्ण दिखाई देते हैं। फिर भी प्रभाव का प्रत्यक्ष सांख्यिकीय निर्णय शैक्षिक अभिरुचि के स्वतंत्र स्कोर तथा उपयुक्त अनुमानात्मक परीक्षण के बिना संभव नहीं है। अतः वर्तमान परिणाम मानसिक विकास से संबंधित सकारात्मक वर्णनात्मक प्रवृत्ति को स्थापित करते हैं और भविष्य के विश्लेषण के लिए स्पष्ट आधार प्रदान करते हैं।

13. निष्कर्ष

अध्ययन के परिणामों से संकेत मिलता है कि विद्यालयी शिक्षण में ऐसी गतिविधियों को पर्याप्त स्थान दिया जाना चाहिए जिनसे विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि सामाजिक और मानसिक विकास के साथ आगे बढ़े। समूह कार्य, चर्चा, समस्या-आधारित अधिगम, परियोजना कार्य, सहपाठी सहयोग और विद्यालयीय गतिविधियाँ विद्यार्थियों को संवाद तथा सहभागिता के अवसर प्रदान कर सकती हैं। इसी प्रकार प्रश्न पूछने, तर्क करने, वैकल्पिक समाधान खोजने और आलोचनात्मक रूप से विचार करने की गतिविधियाँ मानसिक सक्रियता को बढ़ावा दे सकती हैं। शिक्षक की भूमिका केवल विषयवस्तु समझाने तक सीमित न रहकर ऐसा सीखने का वातावरण बनाने की हो सकती है जिसमें विद्यार्थी अपने विचार व्यक्त कर सकें और सहपाठियों के साथ सीख सकें। विद्यालयीय वातावरण में सामाजिक स्वीकार्यता और सहयोग की भावना विकसित करना भी शैक्षिक अभिरुचि के लिए उपयोगी आधार बन सकता है।

अध्ययन 400 विद्यार्थियों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं तथा सामाजिक और मानसिक विकास से संबंधित चयनित कथनों तक सीमित है। प्रस्तुत परिणाम मुख्यतः वर्णनात्मक आँकड़ों पर आधारित हैं। इसलिए इनसे व्यापक कारणात्मक निष्कर्ष नहीं निकाले जाने चाहिए। शैक्षिक अभिरुचि के स्वतंत्र समग्र स्कोर के आधार पर प्रत्यक्ष सहसंबंध या प्रभाव का अनुमानात्मक परीक्षण प्रस्तुत नहीं किया गया है। भविष्य के अध्ययनों में शैक्षिक अभिरुचि का पृथक मापन, अधिक विविध नमूना तथा उपयुक्त अनुमानात्मक सांख्यिकीय परीक्षण शामिल किए जा सकते हैं। विद्यालय, क्षेत्र, सामाजिक पृष्ठभूमि और अन्य संदर्भगत कारकों को भी शामिल करने से इस संबंध की अधिक विस्तृत समझ विकसित हो सकती है।

अध्ययन का पहला प्रमुख निष्कर्ष यह है कि उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के सामाजिक विकास से संबंधित सभी आठ कथनों में सामान्यतः अनुकूल प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। दूसरा निष्कर्ष यह है कि मानसिक विकास से संबंधित सभी आठ कथनों में भी माध्य चार से अधिक रहा। तीसरा निष्कर्ष यह है कि विद्यालयीय सहभागिता, सहपाठी जुड़ाव और सहयोग जैसे सामाजिक पक्षों तथा तर्क, समस्या समाधान, स्मरण और आलोचनात्मक सोच जैसे मानसिक पक्षों को विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभव से जोड़कर देखा जा सकता है। चौथा निष्कर्ष साहित्य के साथ सामंजस्य से संबंधित है, क्योंकि उपलब्ध अध्ययनों में शैक्षणिक रुचि, सामाजिक समर्थन, विद्यालयीय संबद्धता, सामाजिक-भावनात्मक कौशल और मानसिक-भावनात्मक कल्याण के बीच विभिन्न

संबंधों का उल्लेख मिलता है। पाँचवाँ निष्कर्ष यह है कि उच्च माध्यमिक शिक्षा में शैक्षिक अभिरुचि को केवल परीक्षा उपलब्धि की दृष्टि से देखना पर्याप्त नहीं है; इसे विद्यार्थी के सामाजिक और मानसिक विकास के व्यापक संदर्भ में भी समझना आवश्यक है। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का सामाजिक और मानसिक विकास शैक्षिक प्रक्रिया से गहराई से जुड़ा हुआ है। प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक विकास से संबंधित मित्रता, सामाजिक कौशल, समूह कार्य, सहपाठी जुड़ाव, सहभागिता, स्वीकार्यता और सहयोग के संकेतकों में अनुकूल प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं। मानसिक विकास में तर्क, समस्या समाधान, स्मरणशक्ति, नियोजन, ध्यान, मानसिक परिपक्वता, आलोचनात्मक सोच और सीखने की क्षमता से संबंधित प्रतिक्रियाएँ भी अनुकूल रहीं। साहित्य समीक्षा इन परिणामों को व्यापक शैक्षिक संदर्भ प्रदान करती है और बताती है कि सीखने की रुचि तथा संलग्नता को सामाजिक-भावनात्मक और मानसिक विकास से जोड़कर देखना उपयोगी है। अतः उच्च माध्यमिक शिक्षा में शैक्षिक अभिरुचि को केवल उपलब्धि उन्मुख अवधारणा के रूप में न देखकर विद्यार्थी के समग्र सामाजिक और मानसिक विकास से संबंधित शैक्षिक अनुभव के रूप में समझना अधिक सार्थक है।

14. संदर्भ

- Ahmar, F., & Anwar, E. (2013). Socio economic status and its relation to academic achievement of higher secondary school students. *IOSR Journal of Humanities and Social Science*, 13(6), 13–20.
- Siahi, E. A., & Maiyo, J. K. (2015). Study of relationship between study habits and academic achievement. *International Journal of Educational Administration and Policy Studies*, 7(7), 134–141.
- Chellamuthu, S., & Subramanian, K. (2017). Academic Stress and Mental Health among High School Students. *Indian Journal of Applied Research*, 7(5), 404–406.
- Tan, K., Sinha, G., Shin, O. J., & Wang, Y. (2018). Patterns of social-emotional learning needs among high school freshmen students. *Children and Youth Services Review*, 86, 217–225.
- Kumar, M. (2020). A study on the emotional intelligence of higher secondary school students. *Shanlax International Journal of Education*, 8(3), 114–119.
- Rajabalee, B. Y., Santally, M. I., & Rennie, F. (2020). Relationship between students' engagement and academic performances in eLearning. *E-Learning and Digital Media*, 17(1), 1–20.
- Radhamani, K., & Kalaivani, D. (2021). Academic resilience among students: review. *IJRR*, 8(6), 360–369.
- Alqarni, S. A. Y., & Alharbi, F. A. (2022). Effect of social media on development of students' affective variables. *Frontiers in Psychology*, 13, 995958.
- Yeager, D. S., Romero, C., & Dweck, C. S. (2023). Effectiveness of social-emotional learning program for academic and non-academic outcomes: Leader in Me. *AERA Open*, 9(1).
- फाम, S. V. (2024). Influence of social and emotional learning on academic performance, emotional well-being, and implementation strategies: literature review. *Saudi Journal of Humanities and Social Sciences*, 9(12), 512–519.
- बेगम, S. (2024). Analytical Study of Impact of Emotional Intelligence on Academic Performance of Secondary and Senior Secondary Level Students. *IJIP*, 12(4), 2087–2095.
- Zhang, X., & Qian, W. (2024). Effect of social support on academic performance among adolescents: chain mediating roles of self-efficacy and learning engagement. *PLOS ONE*, 19(12), e0311597.
- Shukla, H., Pandey, K., & Kumar, N. (2025). Social Media and Academic Engagement: Effects on Indian Students. *IJISRT*, 10(4), 345–349.